

जनपद अम्बेडकरनगर (उ०प्र०) में भूमि उपयोग : एक भौगोलिक अध्ययन



जगदेव

असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
एस०जी०एन० राजकीय
पी०जी० कॉलेज,
मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ
उ०प्र०, भारत



गणेश कुमार

शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
एस०जी०एन० राजकीय
पी०जी० कॉलेज,
मुहम्मदाबाद, गोहना, मऊ,
उ०प्र०, भारत

सारांश

भूमि मानव का सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो प्रकृति की निःशुल्क देन है, जो मानवीय क्रिया कलापों सहित कृषि का मूलभूत आधार है। वैन जेटी के अनुसार भूमि उपयोगी प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक उत्पादनों के संयोग का प्रतिफलन है। मानवीय आवश्यकताओं के अनुसार भूमि उपयोग एवं महत्व भी परिवर्तित होता रहता है। भूमि के न्यूनतम उपयोग द्वारा भूमि का दीर्घकालीन विकास करना है।

अध्ययन क्षेत्र अम्बेडकरनगर भौगोलिक दृष्टि से उ०प्र० के मध्यवर्ती भाग के घाघरा-गोमती दोआब (अक्षांश $26^{\circ}9'$ उ० से $26^{\circ}40'$ उ० एवं देशान्तर $82^{\circ}12'$ पूर्व से $83^{\circ}05'$ पूर्व) में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 2520 वर्ग कि०मी० जिसमें 3298709 लाख (2011) लोग निवास करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के जनपद अम्बेडकरनगर के भूमि उपयोग का विश्लेषण किया गया है। फसल उत्पादन में नवीन वैज्ञानिक विधियों व तकनीकों को अपनाकर कृषि भूमि में परिवर्तन लाया जा सकता है।

मुख्य शब्द : भूमि उपयोग, कृषि भूमि, कृषि अयोग्य भूमि, अकृष्य भूमि, अनुपयोगी भूमि, भूमि उपयोग नियोजन।

प्रस्तावना

मानव को रहने के लिए स्थान के साथ-साथ भोजन और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार के कच्चे पदार्थ भूमि से ही प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि किसी भी क्षेत्र का भूमि उपयोग उस क्षेत्र के निवास करने वाले मानव की बौद्धिक क्षमता, आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक विकास के स्तर के सूचक होने के साथ-साथ उस क्षेत्र विशेष में प्राप्त भौतिक वातावरण का निरूपक होता है। (वर्मा-1997) मानव भूमि को कृषि योग्य बनाता है। कम उपजाऊ भाग को उपजाऊ बनाता है तथा एक फसली क्षेत्र को बहुफसली में परिवर्तित करता है। जब भू-भाग का प्राकृतिक स्वरूप लुप्त हो जाता है तब मानवीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है। उसे ही भूमि उपयोग कहते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र जनपद अम्बेडकरनगर भौगोलिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश के मध्यवर्ती भाग के घाघरा गोमती दोआब ($26^{\circ}9'$ उ० से $26^{\circ}40'$ उ० अक्षांस एवं देशान्तर $82^{\circ}12'$ पूर्व से $83^{\circ}5'$ पूर्व देशान्तर के मध्य) में स्थित है। प्रशासनिक दृष्टि से पांच तहसीलों अकबरपुर, टाण्डा, जलालपुर, आलापुर, भीटी, एवं विकास खण्ड-अकबरपुर, टाण्डा, बसखारी, कटेहरी, भियांव, भीटी, रामनगर, जलालपुर, जहांगीरगंज, बेवाना (नया) में विभाजित है। जिसमें 111 न्याय पंचायतें एवं 390 गांव समाहित हैं। अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 2520वर्ग कि०मी० है।

जनपद अम्बेडकरनगर का अर्थतन्त्र कृष्येतर संसाधनों के अभाव में मात्र कृषि संसाधनों पर आधारित है। फलतः इस क्षेत्र का भौगोलिक अध्ययन में कृषि भूमि उपयोग का विश्लेषण महत्वपूर्ण विषय हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग को चार उपवर्गों में यथा वनाच्छादि कृषि अप्राय भूमि, कृषि योग्य भूमि एवं कृषित भूमि तथा इन्हें उपवर्गों में विभाजित कर विगत 25वर्षों (1994-1995 से 2016-2017) के परिवर्तित प्रतिरूप का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया। जिसमें 3298709 लोग निवास करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र का उद्देश्य—

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग स्वरूप को प्रयोग में लाना है ताकि उसके आधार पर भविष्य के लिए भूमि उपयोग आयोजना प्रस्तुत की जा सके।

अध्ययन विधि तन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़े विकास खण्ड से एकत्र किए गये हैं। प्राथमिक

आंकड़े प्रायः सर्वेक्षण पर आधारित होते हैं। इन आंकड़ों का एकत्रीकरण कृषकों से व्यक्तिगत पूँछ-तौँछ प्रशिक्षण के द्वारा किया गया है। इसी प्रकार द्वितीय आंकड़े विकास खण्ड तहसील जनपद एवं बोर्ड ऑफ रेवन्यू लखनऊ आदि कार्यालयों से प्रकाशित और अप्रकाशित दोनों रूपों में किया गया है। जिसमें जलवायु, भूमि प्रयोग, शष्प प्रतिरूप, सिंचाई सम्बन्धी आंकड़े मुख्य हैं।

LOCATION OF DISTRICT**विश्लेषण एवं व्याख्या****सामान्य भूमि उपयोग वर्गीकरण**

मानव अपने विविध आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जब भूमि का वर्गीकृत उपयोग करता है तो उसे भूमि उपयोग वर्गीकरण कहते हैं।

भूमि उपयोग की विस्तृत एवं सूक्ष्म स्तरीय संवर्गों के विश्लेषण हेतु राजस्व परिषद उ०प्र० (लखनऊ) ने

विभाजित किया है। प्रायः अप्रकाशित आंकड़ों (खसरा) के आधार पर भूमि पर जो भूमि के प्रत्येक टुकड़े के सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन हेतु बहु-उपयोगी है। जिसे कृषि भूगोलविदों ने विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन हेतु बनाया है। अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग का विस्तृत वितरण प्रतिरूप निम्नलिखित सारणी में दिया गया है—

परिवर्तन भूमि उपयोग	विश्लेषण वर्ष								परिवर्तन	
	1994-1995		1990-00		2010-11		2016-17		1994-95	2016-17
	क्ष०(हे०)	प्रतिशत	क्ष०(हे०)	प्रतिशत	क्ष०(हे०)	प्रतिशत	क्ष०(हे०)	प्रतिशत	क्ष०(हे०)	प्रतिशत
वनाच्छादित भूमि कृषि अप्राप्य भूमि कृषि योग्य भूमि कृषित भूमि	572	0.24	1428	0.66	328	0.13	328	0.13	572	0.13
	4619	1.94	4401	2.05	4074	1.72	4093	1.73	4619	1.73
	35543	14.96	27152	12.68	39731	16.82	41215	17.44	35543	17.44
	163295	68.74	167384	78.22	166756	70.59	169224	71.64	163295	71.64
योग=	204029	100	200365	100	210889	100	214860	100	-	-

1. वनाच्छादित भूमि
2. कृषि अप्राप्य भूमि
 - (क) अधिवास
 - (ख) जलाशीय क्षेत्र
 - (ग) अन्य क्षेत्र

3. कृषि योग्य भूमि
 - (क) बाग एवं बगीचा युक्त भूमि
 - (ख) चरागाह
 - (ग) परती भूमि
 - (घ) ऊसर भूमि

4. कृषि भूमि

(क) सिंचित भूमि

(ख) असिंचित भूमि

वनाच्छादित भूमि

जैविक संसाधनों में सबसे महत्वपूर्ण संसाधन वन है। जो अन्य सभी संसाधनों का जीव आधार है। वनों का महत्व तब तक महसूस किया जाने लगा जब तक ईंधन चारा इमारती लकड़ी आदि की कमी तथा प्रकार की परिस्थितिकीय समस्याएं विकराल रूप धारण करने लगी। इसी को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण विदों ने पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखने के लिए समस्त भौगोलिक क्षेत्रफल का एक तिहाई भाग वनावरण रखने का सुझाव दिया।

अध्ययन क्षेत्र में वनाच्छादित भूमि के क्षेत्रफल में क्रमशः वृद्धि एवं ह्रास हुआ है। जहाँ वर्ष 1994-95 में जनपद में 572 हेक्टेयर भूमि पर वनाच्छादित था वहीं वर्ष 1991-2000 सरकार द्वारा भूमिहीनों को भूमि आवंटित कर देने से भूमि घट कर 750 हे० ही रह गयी। 2000-2001 में सघन सामाजिक वनारोपण कार्यक्रम के कारण 2 प्रतिशतकी वृद्धि हुई जिसमें वन क्षेत्र बढ़ कर 572 हे० हो गया जबकि 2016-17 में पुनः वनाच्छादित भूमि में घटोत्तरी दर्ज की गयी क्योंकि सड़कों के किनारे लगाए गये पेड़ों को विभाग द्वारा कटायी से घटकर 570 हे० रह गयी है।

कृषि अप्राप्य भूमि

कृषि अप्राप्त भूमि से तात्पर्य उस भूमि से है जो अद्यावधि तक कृषि हेतु प्रयुक्त नहीं की गयी। किसी भी क्षेत्र विकसति भूमि उपयोग प्रतिरूप में जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक सामाजिक विकास स्तर में क्रमशः क्षेत्रीय परिवर्तन होता रहता है। इसके अन्तर्गत मानव बस्तियाँ, सड़कें, रेलमार्ग, जलीय क्षेत्र एवं अन्य कृषि अप्राप्त सांस्कृतिक इकाइयों को सम्मिलित किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि अप्राप्य भूमि में गतिक प्रतिरूप को देखा जाये तो वर्ष 1994-95 में 4619 हे० कृषि अप्राप्य भूमि थी जो वर्ष 2000-01 में घटकर 4401 हे० रह गयी है। यानी इस अवधि में 218 हे० की कमी हुई है। वर्ष 2010-11 में कृषि अप्राप्य भूमि जलराशि क्षेत्र घटकर 4074 हे० हो गया जो वर्ष 2016-17 में जलीय क्षेत्र एवं अन्य कृषि अप्राप्य क्षेत्रफल में कमी होने के कारण अप्राप्य भूमि पुनः घटकर 4093 हे० रह गयी।

कृषि योग्य भूमि

कृषि योग्य भूमि से अभिप्राय उस भूमि से है जो वर्तमान वर्ष में कृषि हेतु प्राप्त नहीं किन्तु जिसे अन्य लागत द्वारा कृषित भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है। मलिक 1975 सामान्यतः वर्षा की अनिश्चितता व अभाव ऊसर भूमि, नदियों के मार्ग परिवर्तन से रेत की मोटी परत पर जाने आदि कारणों से बेकार पड़ी भूमि इस श्रेणी में आती है।

अध्ययन क्षेत्र के गत्यात्मक स्वरूप को देखने से स्पष्ट होता है कि कृषि योग्य भूमि में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। वर्ष 1994-95 में कृषि भूमि का क्षेत्रफल 35543 हे० था लेकिन 2000-01 में वर्षा की कमी आधुनिक कृषि यन्त्रों एवं सिंचाई के समुचित साधनों के अभाव आदि के

कारण कृषि योग्य भूमि का क्षेत्र बढ़कर 27152 हे० हो गया यानी एक दशक में कृषि योग्य भूमि के क्षेत्र में 8391 हे० बढ़ोत्तरी हुई। वहीं 2010-11 एवं 2016-17 में समय से वर्षा न होने के कारण इस प्रकार की भूमि क्षेत्र क्रमशः बढ़कर 398031 हे० एवं 41215 हे० हो गया; जबकि विवेच्य वर्ष 1994-95, 2016-17 में कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल बढ़कर 76758 हे० हो गया।

कृषित भूमि

कृषित भूमि भू उपयोग का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके उपयोग की विभिन्न अवस्थाएं सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास स्तर की परिचालक है। चन्देल 1991 सदियों से ही अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित रही है। साथ ही साथ मानसूनी जलवायु, नदीकृत जलोढ़, उपजाऊ मृदा, सामान्य ढालमुक्त, समतल मैदान, एवं उच्च जनसंख्या घनत्व इत्यादि कारणों से अधिक होना स्वाभाविक है।

अध्ययन क्षेत्र कृषित भूमि के परदृष्टि बात करें तो वर्ष 1994-95 में कृषित भूमि का क्षेत्रफल 163295 हे० प्रतिदिन था लेकिन वर्ष 2000-01 में समय से वर्षा न होने से परती भूमि में बढ़ोत्तरी होने से कृषित क्षेत्र बढ़कर 167384 हे० रह गया। वहीं 2010-11 में सिंचाई व्यवस्था में सुधार एवं पुराने हो चुके बागों के पेड़ों को काटकर कृषित भूमि में परिवर्तित कर दिये जाने से कृषि भूमि का क्षेत्रफल बढ़कर 166756 हे० हो गया लेकिन जनसंख्या के भरण पोषण के लिए नई तकनीकों के माध्यम से कृषि क्षेत्र को बढ़ाया जा रहा है। अतः इससे भूमि उपयोग का विकास तेजी गति से हो जाने पर विचार किया जायेगा।

निष्कर्ष

सांख्यिकीय विवेचन व मानचित्रिय प्रदर्शन के सम्मिलित विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि जनपद अम्बेडकर नगर भूमि संसाधन से परिपूर्ण है। यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या के सन्दर्भ में भूमि का उपयोग समयानुसार परिवर्तित हो रहा है। लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन की अति आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र में वनों का विवरण पर्यावरणीय मानक पर ही है इसमें और वृद्धि करने की आवश्यकता है। कृषि अप्राप्य भूमि के अधिवास, जलाशीत क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास किया जाना चाहिए। अध्ययन क्षेत्र में बढ़ती जनसंख्या के दबाव को देखते हुए कृषि योग्य भूमि के अन्तर्गत परती एवं ऊसर भूमि को वैज्ञानिक विधि से उपजाऊ भूमि में परिवर्तन करने की अति आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र में बिखरे चारागाहों को सुनियोजित करने की आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि जनसंख्या के संदर्भ में कम है सिंचाई सुविधाओं का विकास कर के कृषि भूमि का विस्तार किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान एवं औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है जनपद अम्बेडकर नगर में बढ़ती हुयी जनसंख्या को ध्यान में रखकर भूमि उपयोग के विधियों द्वारा सीमित कृषि क्षेत्र में कृषि उत्पादकता को बढ़ाना एवं बनाच्छादित भूमि में कोई परिवर्तन किये बिना ही जनसंख्या के भरण पोषण को ध्यान में रखकर

नवीनतम वैज्ञानिक विधियों का सहारा लेना जिससे जनसंख्या का समावेसित विकास सम्भव हो सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- Bannere. H.H. (1939) , "Soil Conservation," P- 94*
वर्मा, एस0एस0 (1997) "वनविनाश का अभिप्रेरक कृषि विकास : गोरखपुर परिक्षेत्र तराई का अध्ययन" सिंह जगदीश द्वारा सम्पादित पुरस्तक "संघृत भूमि उपयोग" (पूर्वी उत्तर के सन्दर्भ में) पृष्ठ-24-32
- Malik V. (1991) "The UP Land Record Manual" Part 1 Eastern Book Company Lucknow PP 61&62*
- Chandel R.S. (1991) " Agricultural Change in Bundel Khand Region" Star Distributers Varanasi, PP & 63-64*
- Chauhan. D.S. (1966) : Studies in utilization of Agricultural land. Agrawal 2-Co. Agra. pp. 22-24.*
- रूहेलखण्ड भौगोलिक शोधपत्रिका अंक 15 दिसम्बर 2013।